

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला— ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर में 118वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनी का शुभारंभ

पंतनगर। 10 अक्टूबर 2025। गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पंतनगर में 118वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनी का शुभारंभ उत्तराखण्ड के माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय रक्षा एवं पर्यटन राज्य मंत्री तथा सांसद श्री अजय भट्ट, उत्तराखण्ड सरकार के कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री श्री गणेश जोशी विशिष्ट अतिथि के रूप में तथा विश्वविद्यालय बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट के सदस्य एवं विधायक रूद्रपुर श्री शिव अरोड़ा, पूर्व विधायक किच्छा श्री राजेश शुक्ला, पद्मश्री डा. माधुरी बर्थवाल एवं रूद्रपुर के मेयर श्री विकास शर्मा तथा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी एवं सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के कुलपति डा. सतपाल सिंह बिष्ट एवं कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह चौहान सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। सर्वप्रथम माननीय राज्यपाल द्वारा विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थी श्री विवेक नौटियाल के सहयोग से सेमीकंडक्टर लैब और जीर्णोद्धार के लिए सभागार का फीटा काटकर उद्घाटन किया गया।

माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह ने अपने उद्घाटन उद्बोधन में 118वें किसान मेले के भव्य आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इस मेले में स्टॉलों की संख्या 503 तक पहुंचने पर हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि पंतनगर की धरती पहले ही हरित क्रांति दे चुकी है और अन्य क्षेत्रों यथा शहद, सर्गंध, श्रीअन्न में भी पंतनगर की धरती से क्रांति आयेगी। उन्होंने बताया कि कृषि मेले के भ्रमण करते समय विद्यार्थियों और वैज्ञानिकों का नवाचार के प्रति उत्साह देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। इस बात की भी संतुष्टि है कि विद्यार्थी ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग कर रहे हैं। हमारे प्रधानमंत्री का 2047 तक विकसित राष्ट्र एवं आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना अवश्य साकार होगी। आधुनिक डिजिटल तकनीकों जैसे सेमीकंडक्टर, ड्रोन, सेंसर, जीपीएस आदि के कृषि में हो रहे प्रयोग से कृषि को और उन्नत बढ़ाने की संभावना बढ़ी है। उन्होंने कहा कि मुगलों और अंग्रेजों के शासनकाल में हमने जो औद्योगिक क्रांति हासिल नहीं कर पाये उसे अब प्राप्त करना है। स्टार्टअप एवं उद्यमिता पर और अधिक बल देना है। उन्होंने विश्वविद्यालय के एक पूर्व छात्र द्वारा दस करोड़ की राशि से उपकरण दिये जाने की प्रशंसा की। विश्वविद्यालय से अबतक 40 हजार से अधिक विद्यार्थी उपाधि प्राप्त कर चुके हैं और हर एक विद्यार्थी ब्रांडेड अंबेस्डर हैं। उन्होंने कहा कि समर्पण की भावना से सीमित साधनों में भी बहुत अधिक की प्राप्ति की जा सकती है। विश्वविद्यालय का तीन बार सरदार बल्लभ भाई पटेल पुरस्कार से सम्मानित होना एक बहुत गौरव की बात है। विश्वविद्यालय की 'पंतनगर बीज' के नाम से अलग पहचान है। यदि हम कृषि की रक्षा करेंगे तो कृषि हमारी रक्षा करेगी। उन्होंने प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में संचालित विभिन्न योजनाओं यथा किसान सम्मान योजना, ड्रोन दीदी योजना, महिला विशेष स्वयं सहायता ग्रुप पर भी प्रकाश डाला। इस बात पर उन्होंने बल दिया कि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित तकनीक आखरी किसान तक पहुंचनी चाहिए। प्राकृतिक खेती को अपनाकर रसायन मुक्त उत्पादन पर बल देने की अत्यंत आवश्यकता है।

विशिष्ट अतिथि श्री अजय भट्ट ने कृषकों के हित में विश्वविद्यालय के प्रयासों की प्रशंसा की और कृषि मेले के भव्य आयोजन के लिए हार्दिक बधाई दी। पंतनगर विश्वविद्यालय देश के किसानों के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। यहाँ की तकनीकी उपलब्धियाँ और अनुसंधान कार्य किसानों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को साकार करने में किसान की भूमिका सबसे अहम है।

विशिष्ट अतिथि श्री गणेश जोशी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम पहले विदेशों से अन्न का आयात करते थे जिसकी क्वालिटी बहुत ही खराब होती थी परन्तु हम उसे खाने के लिए मजबूर थे। आज देश की 1.4 अरब जनसंख्या को ही नहीं अन्न मिल रहा बल्कि हमारे द्वारा 89 देशों को खाद्यान्न का निर्यात भी हो रहा है। उन्होंने विश्वविद्यालय को 361वें से 209वें रैंक पर लाने के लिए कुलपति के प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने प्रधानमंत्री की योजनाओं के बारे बताते हुए किसान सम्मान निधि के माध्यम से किसानों के मनोबल को बढ़ाने की बात कही। उन्होंने बताया कि ड्रैगन फ्रूट, श्रीअन्न के बारे में नीतियाँ बनी हैं और उत्तराखण्ड में मखाने और सिंघाड़े की खेती पर भी बल देना है तथा अन्नदाता को मजबूत करना है। प्रधानमंत्री के अन्तर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष 2023 के मुहिम के कारण श्रीअन्न की विश्व स्तर पर मांग बढ़ी है और सभी अन्नों में मंडुवे का न्यूनतम समर्थन मूल्य सबसे अधिक है। उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद इसका क्षेत्रफल लगभग 2 लाख हेक्टेयर घटा है परन्तु खाद्यान्न उत्पादन में 3 लाख टन की वृद्धि हुई है।

कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए इस किसान मेले में पांच सौ से अधिक आये स्टाल के बारे में बताते हुए पंतनगर किसान मेले की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हमारे वैज्ञानिक एवं विद्यार्थी पूरे तन-मन से समर्पण की भावना से योगदान दे रहे हैं और विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों को किसानों तक पहुंचाने के लिए सदैव तत्पर है।

प्रारम्भ में निदेशक प्रसार शिक्षा डा. जितेन्द्र क्वात्रा द्वारा बताया गया कि मेले में पांच सौ से अधिक स्टाल लगे हैं और इस वर्ष 30 से 35 हजार कृषकों की मेले में आने की संभावना है। लगाये गये स्टालों में कृषि यंत्र, जैविक उत्पाद, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, दुग्ध उत्पाद, पुष्प एवं सब्जी की नवीन प्रजातियाँ, ड्रोन तकनीक, सेंसर आधारित कृषि प्रणाली, तथा स्मार्ट कृषि उपकरणों का प्रदर्शन किया गया है। महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा घरेलू उत्पादों जैसे जैम, जेली, पापड़, अचार, बेकरी उत्पाद, बडियों, तथा हस्तशिल्प सामग्रियों का प्रदर्शन किया गया है।

अंत में निदेशक शोध डा. सुभाष चंद्रा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों द्वारा विभिन्न कृषि साहित्यों का विमोचन किया गया तथा उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलों के कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से चयनित 12 प्रगतिशील कृषकों को सम्मानित किया गया। गांधी हाल में जिलाधिकारी ऊधमसिंह नगर, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, एसडीएम, अधिष्ठाता, निदेशकगण, संकाय सदस्य, किसान, विद्यार्थी, वैज्ञानिक, शिक्षक, अधिकारी, विभिन्न कम्पनियों के प्रतिनिधि एवं फ्रांस से आये 9 विद्यार्थियों के दल ने भी प्रतिभाग किया।

